

---

# Pramodakritam Shiva Stotram

---

## प्रमोदकृतं शिवस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Pramodakritam Shiva Stotram

File name : pramodakRRitaMshivastotram.itx

Category : shiva, tAmraparNImAhAtmya, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : tAmraparNImAhAtmya | adhyAya 29/114-122||

Latest update : December 13, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 13, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

प्रमोदकृतं शिवस्तोत्रम्



प्रमोद उवाच ।  
प्रायः प्रपन्नार्तिहरोऽसि नाथ प्रपन्नसर्वेन्द्रियवृत्तिभाजाम् ।  
अमुक्तसान्निध्यकरो बुधानां अतस्त्वदन्यं शरणं न पश्ये ॥ ११४ ॥  
प्रवातशीलः प्रहतेषु नित्यं प्रसिद्धमेतद्वचनं त्रयीषु ।  
अनर्चतो मे कृपणस्य शम्भो कृपाकरोऽयं तदहो विचित्रम् ॥ ११५ ॥  
उपेयुषामेव तनोति कामं सुरद्रुमश्रोत्र कथं न दृष्टम् ।  
पादारविन्दोऽनुस्मरणोऽनुतापी दूरे ममानुग्रहकृद्विचित्रम् ॥ ११६ ॥  
पवित्रितं जन्म जगत्त्रयो यत्त्वया कृपालोचनपातितस्य ।  
ममाधुना मङ्गलपुण्यपूर्णा स्वयं समानन्दसुसम्पदो यत् ॥ ११७ ॥  
नमः शिवाय च शुभहेतुहेतवे सुधांशुचूडामणये नमो नमः ।  
नगात्मजाऽऽलिङ्गितचारुमूर्तये सहस्रकृत्वः प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥ ११८ ॥  
गिरीश विश्वेशाधुना पुनीहि पुण्येन कृपाक्षिवर्चसा च ।  
पुरत्रयध्वंसनपुञ्जितश्रीः किमद्भुतं भूरुहमात्रतक्षणम् ॥ ११९ ॥  
वृषाङ्क विश्वाधिक भर्ग ते पादाम्बुजाराधानभाग्यदायिना ।  
विलोकनेनाशु विलोकयाधुना प्रपन्नमेनं जनमार्तिभञ्जन ॥ १२० ॥  
शम्भो तवालं जनितानिलभागधेयमन्ते विचिन्तयति विश्वमिदं समस्तम् ।  
त्वय्यद्भुतामधुना तरुमात्रदाहलीलाविलासकोपभराद्व्यालो ॥ १२१ ॥  
प्रसीद मयि सन्ततं प्रमथनाथगाथेतर  
प्रवाह करुणाम्बुधे प्रणतिभाति पापाहन् ।  
अकालविलयागमव्यसनशङ्कुशङ्कावता-  
मपाकुरु भयामयं स्वपदसेविनां मा चिरम् ॥ १२२ ॥  
इति ताम्रपर्णीमाहात्म्ये एकोनत्रिंशाध्यायान्तर्गतं

प्रमोदकृतं शिवस्तोत्रं

ताम्रपर्णीमाहात्म्य । अध्याय २९/११४-१२२ ॥

tAmraparNImAhAtmya . adhyAya 29/114-122..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Pramodakritam Shiva Stotram*

pdf was typeset on December 13, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

